अप्रैल-जून 2019

25
रजत जयंती वर्ष

अवध ज्योति

छत्तीसगढ़ पर विशेष

अवधी त्रैमासिकी

अवध-ज्योति

अंक : अप्रैल-जून 2019

संरक्षक
पवन सिंह चौहान

सम्पादक
डॉ. रामबहादुर मिश्र

उप-संपादक
रमाकांत तिवारी 'रामिल'

प्रबंध संपादक
डॉ. मिथिलेश दीक्षित

सह-संपादक
डॉ. सत्यप्रिय पाण्डेय
नागेन्द्र बहादुर सिंह चौहान

संपादन सहयोग
विश्वम्भर नाथ अवस्थी
विष्णु कुमार शर्मा

सलाहकार संपादक
डॉ. त्र्यम्बक नाथ त्रिपाठी

पीयर रिव्यू पैनल
डॉ. हेमराज सुंदर, मॉरिशस
श्री विक्रममणि त्रिपाठी, नेपाल
प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, लखनऊ
डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, लखनऊ
डॉ. राकेश पाण्डेय, दिल्ली
श्री प्रदीप तिवारी 'रामिल'

awadhjyoti@gmail.com
tryambaknathtripathi@gmail.com
Mob. : 9450063632

सम्पादकीय

रामजोहारि 2-4

लेख

1. छत्तीसगढ़ का लोक व लोकसंस्कृति 5-9
   - डॉ. अल्पना मिश्र
2. छत्तीसगढ़ी लोकगीत : करमा 10-15
   - आस्था तिवारी
3. छत्तीसगढ़ी फाग गीत : लोकमन की उछाह 16-25
   - डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर
4. कलावंत अनूप रंजन पाण्डेय 26-30
   - संजीव तिवारी
5. छत्तीसगढ़ी के कवि और संघर्ष चेतना 31-35
   - डॉ. श्यामसुंदर
6. छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध संस्कार गीत : सोहर 36-40
   - डॉ. विभाषा मिश्र
7. अवध की कुछ प्रमुख कृषि शब्दावलियाँ 41-45
   - डॉ. सत्यप्रिय पाण्डेय
8. अवधी के विशिष्ट उभयानुवाद 46-51
   - प्रो सूर्य प्रसाद दीक्षित
9. बिरहा के घराने 52-55
   - सियाराम सिंधु
10. अवधी बिरहा गीतों की गायन शैलियाँ 56-59
    - सियाराम सिंधु
11. अवधी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ 60-64
    - प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित
12. मृगेश के बहाने : आधुनिक अवधी... 65-77
    - विनय दास
13. जनकवि रफ़ीक सादानी 78-79
    - डॉ. चन्द्रशेखर

अवधी कृतियों की समीक्षा

जान-पहचान 80-85

अवधी समाचार

हालचाल 86-92

चिट्ठी-पत्री 93-96

• **मूल्य :** 25/- • **एक प्रति वार्षिक :** 200/-
• **आजीवन सदस्यता :** 2000/-

रामजोहारि

आठवीं अनुसूची और बोली

दुनिया बड़ी तेजी से बदलत जात है। भूमंडलीकरण औ बाजारबाद के चलत भये ''यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीन'' वाली कहकूति चरितार्थ होय लाग है। पूरी दुनिया कै अर्थव्यवस्था आज कै खास एजेण्डा बनि गवा है। दुनिया के ई नये महाजन बस आपन नफा-नकसान देखत हैं औ यही का आपन धरम-करम समझत है। हमरे समाज मा तीन मेर के मनई हैं बड़कये, बिचुवा और छोटकये। बड़कये धन धानि से अतना भरे पूरे हैं कि उनका अपने स्वार्थ के आगे कुछौ सुझात नाही, बिचुवा अपनी घर गिरिस्थी रोजी रोजगार, जंवारी रूतबा मा जूझि रहे हैं, छोटकये दुइ जून की रोटी मा जूझि रहे हैं। धरम-करम, रीति-रेवाज, नीति-अनरीति, अच्छा-बुरा, नैतिकता-अनैतिकता मा कौनौ भेद नाहीं रहिगा। उदर भराऊ विद्या के पाछे पुरी दुनिया बौरानि है। जाहिर बात है कि ई समय मा भाषा और संस्कृति कै कोऊ पुछत्तर नाही। भाषा चूल्हे मा जाय वहिसे कोहू कै पेट भरे। भाषा औ संस्कृति के साथ समाज कै बेरूखी होय के नाते तमामन भाषा और बोली मिटत जात हैं। भाषा औ बोली कै अकाल मौत होत जात है। ई चिंता कै विषय है। ई चिंता से नावकिफ समाज कतना खोखला होत जात है येह पर ध्यान देय कै जरूरत है।

हिन्दी भाषा का भारतीय संविधान मा राजभाषा कै दर्जा दीन गया, इहकै वजह हैं, भारत के 80 फीसद मनई भारत मा हिन्दी जानत हैं, बोलत है, समझत हैं, पढ़त-लिखत हैं। भारत देस के सबसे बड़े भूभाग मा ई बोली औ समझी जात है। हिन्दी की तमामन बोली है, हरियाणवी, राजस्थानी, बुंदेली, कौरवी, कन्नौजी, भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढ़ी बघेली, ब्रजी, मगही, मैथिली, मेवाती। ई सब बोलिन मा तमाम उप बोली हैं। इहमा कौनउ दुइ राय नही कि हिन्दी कै अतना बड़ा वैभव ई सब बोली औ उप बोली के बल से है। अपनी अपनी बोली बानी से सबका अनुराग है और सबै बोली बोलै वालै अपनी बोली का सहेजै मा लाग है, जउन अच्छी बात है। मुला इधर यक नव बखेड़ा खड़ा होइ गवा है बोली के खातिर ऊ है बोली का आठवीं अनुसूची मा सामिल करावै कै होड़

और जिंद करै लाग है। इहकै पाछे बोली भाषा के अनुरागी मा शामिल कटावै कै महत्त्वाकांक्षा वाले लोग कुछ जादा है। कुछ सांसद और नेता इहका हवा दै रहे हैं। इन सबकै आपन आपन स्वारथ है। हमार आप सब से हाथ जोरि के बिनती है कि ई कुचक से बचा जाय। हिन्दी के खिलाफ यक अन्तर्राष्ट्रीय षडयंत्र रचा गया है जिहकैं खुलासा डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल (प्रमुख भाषाविद) किहिन है बात अरब की जनसंख्या वाली दुनिय मा अब हिन्दी अपनी ऊंचाई पर पहुंचि गै है-दुनिया के एक अरब तीस करोड़ मनई जानते हैं, बोलत हैं, समझत है, लिखत हैं। अबहिन तक ई मान्यता रही कि भाषा-भाषी लोगन के लिहाज से चीन कै राज भाषा मंदारिन दुनिया मा पहिले नम्बर पर है, अंग्रेजी दुसरे और हिन्दी तिसरे नंबर पै। मुला नई खोज खबर के मुताबिक मंदारिन जौने वाले एक अरब है, लिहाजा, हिन्दी पहिले नम्बर पर खुद ब खुद आय गै।

हिन्दी कै यह उपलब्धि दुनिया की आंखी मां खटकै लाग और हियैं से कुचाल सुरू होइ गै। कोशिश कीन जाय रही कि हिन्दी का खास-खास बोली भोजपुरी अवधी, राजस्थानी, ब्रजी आदि का भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची मा शामिल कराय के हिन्दी से अलग कै दीन जाय तौ हिन्दी खुदै अल्पमत मा आईय जाये। ई मुद्दा पर कीन गै 'अवधी पंचाइत' कै ब्यौरा पाछिल अंक मा विस्तार से छपा है। ई पंचाइत मा नामी गेरामी साहित्यकार और भाषा विद आपन-आपन विचार पेस किहिन जिहमा विभूतिनारायण राय, काशीनाथ सिंह, शिवमूर्ति, डॉ. अमरनाथ, डा।. सदानंद साही, मालिनी अवस्थी, डॉ. भगवान वत्स सहित बीसन विद्वान आपन तर्क दिहिन है, वही मा से प्रख्यात साहित्यकार काशीनाथ सिंह कै मत, ''भोजपुरी को लेकर जो आजकल हो रहा है, उससे मैं सहमत नहीं हूँ और हमारा ख्याल है कि लेखन वर्ग की शायद ही हो। दरअसल ये अपनी अलग दुकान चलाने की कोशिश हो रही है भोजपुरी के नाम पर! और इसमें दो राय नहीं कि भोजपुरी अस्तित्व में रहनी चाहिए। इस पर शिवदान सिंह वगैरह काफी बहसें का चुके हैं। प्रगतिशील लेखक संघ का अपना स्टैण्ड रहा है इसे लेकर और इसमें कोई आपत्ति नहीं। बोलियों के विकास की इन्हें जीवित रहना चाहिए जो कि हिन्दी ही हो सकती है। राहुल सिंह और शिवदान सिंह चौहान के बीच में बोलियों में बहस बहुत पहले हो चुकी है, जनपदीय भाषाओं को लेकर। लम्बी बहस चली है इस पर बोलियों में भी बहुत सी बोलियाँ हैं जिसे राजस्थान थी 74 और छत्तीसगढ़ की 93 बोलियाँ हैं। वस्तुतः 1944 में शिवदान सिंह चौहान ने जनपदीय भाषाओं का प्रश्न 'मातृभाषाओं की समस्या' शीर्षक से और वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'जनपदीय आंदोलन' शीर्षक से लेख लिखा था। तो इसका जवाब भी शिवदान सिंह ने अपने इस 70 पृष्ठ के आलेख में दिया था, जिसमें एक तो ये लिखा था जनपदीय भाषाएं ही हिन्दी की ताकत हैं, काजोरी नहीं। जनपदीय बोलियों को विकास करने की स्वतंत्रता नहीं मिली तो मातृभाषाएं मृत भाषाएं हो जायेंगी और सिर्फ पुरातत्व की दृष्टि से महत्व रखेगी।हिन्दी क्षेत्र की विभिन्न बोलियों के बीच एकता का सूत्र है तो सिर्फ हिन्दी।''

क्षेत्रीय भाषाओं की आपसी लड़ाई में अंग्रेजी का दावा मजबूत होगा। ''आदरणीय काशी नाथ सिंह कै यह कथन वहि षडयंत्र की ओरिया इसारा करत है, जउने कै चिंता जाहिर कीन गै है। भोजपुरी लोगन के बारे में काशीनाथ सिंह आगे लिखत हैं, ''भोजपुरी में किसी बड़े कवि ने अपनी

मातृभाषा में कुछ नहीं लिखा है। ले देकर कुछ लोग इसके सूत्र कबीर में देखते है और वहाँ से भिखारी ठाकुर तक आते हैं ओर बाकी तो सब गाने बजाने वाले क्षेत्रीय आंचलिक कवि वगैरह हैं। यह बहुत अनुचित मांग है। और इसके पीछे दूर कहीं न कहीं पूर्वांचल की भी रणनीति है। भाषा के आधार पर आगे चलकर राज्य की मांग की जायेगी।

आदरणीय काशीनाथ सिंह खुद भोजपुरिहा होंय मुला उइ वाजिब बात किहिन है। आज भोजपुरी भाषी सबसे ज्यादा आगे हैं अठवीं अनुसूची बरे। उनके पाछे-पाछे राजस्थानी भाषी हैं। यही के साथे तमाम बोली-बानी वाले हैं। हमार आपन मानब है कि बिना अठवीं अनुसूची मा शामिल भये बोली-बानी कै विकास होइ सकंत है, अकादमी, अध्ययन पीठ, अध्ययन केन्द्र, शोध-सर्वेक्षण केन्द्र बनाय के इनकै उद्धार कीन जाय सकत है। यक बात अरूर जरूरी है ई मुद्दा पर बहस करै खाति देश के भाषा विज्ञानी, साहित्यकार, विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, साहित्य अकादमी उ.प्र. हिन्दी संस्थान, बिहार, हरियाना, राजस्थान के सरकारी हिन्दी संस्थान यकट्ठा होंय और ई मुद्दा पर सर्वसम्मत से आपन-आपन विचार पेश करैं।

ई अंक छत्तिसगढ़ी अवधी पर केन्द्रित है। छत्तीसगढ़ी और बघेली दुइनौ अवधी कै उपभाषा होंय। महाजनपदकाल मा अवधी कोशली जात रही। कोशल जनपद के दुइ भाग रहे एक उत्तर कोशल जिहमा अजोहया के इर्द-गिर्द कै जेंवार रही और दक्षिण कोशल मा छत्तीसगढ़ी औ बघेली। ई मुद्दा पर फिर कबौ चर्चा कीन जाये।

सब पंचन का रामजोहारि
रामबहादुर मिसिर